पांच इंद्रियों से न ईश्वर मिले न मुक्ति

शिष्य थॉमसन

''यूयं निरर्थकात क्षयणीर्य रूप्य सुवर्णादिमि मुक्ति न प्राप्य
(तुम्हारी मुक्ति सोने, चांदी जैसी नाशवान वस्तुओं से नहीं मिली है– बाइबिल)

मनुष्य के कर्म नहीं परमेश्वर का मुक्ति उपाय चाहिये

आचार्य यीशदास जी आश्रम की सफाई कर रहे थे आश्रम साफ सुथरा लिपा पुता हुआ अच्छा लग रहा था तभी तीर्थयात्रियों का एक झुंड उनके आश्रम के आहाते में आ खड़ा हुआ।

आचार्य जी प्रणाम्, यदि आप अनुमति दें तो अंदर आये, कुछ तीर्थयात्री एक साथ बोल पड़े। आचार्य जी बोले 'क्या ये काई पूछने की बात है, चले आइये अंदर।

तीर्थ यात्रियों ने अपनी दुविधा बताई, बोले आचार्य जी धर्मशाले भरे पड़े हैं। और होटल में रहने के पैसे हम लोगों के पास हैं नहीं, और कल हमें पहाड़ों की ओर निकलना है। आचार्य यीशुदास जी बोले ठीक है, हमारी कुटिया आप की है, और हाँ कल मुझे भी सेवा हेतू तराई में सुंदरपुर के कुष्ट ग्राम जाना है।

आचार्य जी ने लोगों का सामान रखवाया और सबको पानी पिलाने लगे। यात्रियों में से एक श्री कर्मानंद जी ने एक टिप्पणी करी, बोले आचार्य यीशुदास जी हम तो ईश्वर की खोज में और मुक्ति की प्राप्ति के लिए निकले है। और हमें प्रतीत होता है, कि ये दोनों ही आप को मिल गये हैं। आचार्य जी ने स्वीकारा और कहा सच है मुझे परमेश्वर और मुक्ति दोनों मिल गये हैं।

चलिये सब बैठ जाइये मैं आपको मार्ग, सत्य और जीवन के बारे में बताता हूँ।

सृष्टि एक माया है या सत्य

हम मनुष्यों के पास एक सवाल दिमाग में हमेशा रहता है। यह सृष्टि क्या है? क्या माया है? या वास्तविकता?

हमारी पाँच इंद्रियां तो बताती है ये एक वास्तविक भौतिक संसार है। अवश्य है इसकी सृष्टि हुई है और कोई इसका सृष्टिकर्त्ता है। जो परमेश्वर है।

इस सृष्टि को देखकर हम नास्तिक नहीं बन सकते। मनुष्य शायद परमेश्वर को अपने जीवन से और भविष्य से बाहर रखने की कोशिश करे। और कह सकता है, कि हमें ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। हम स्वयं परिपूर्ण है। हमारा स्वास्थ्य अच्छा है। धंधा, नौकरी अच्छी है। पैसे बंगला, गाड़ी है। परिवार सुखी है। तो ईश्वर का क्या काम?

वास्तविकता

सच तो ये है, कि हर मनुष्य कमजोर है और उसमें शारीरिक और आत्मिक घटी

है। और इस कारण उसे ईश्वर से मिलने की और मुक्ति प्राप्त करने की आवश्यक्ता है। छुट-पुट सत्य उसके पास है, पर अज्ञान और अंधेरा है वो भटका हुआ है।

सृष्टि का इतिहास

सृष्टि कब और कैसे अस्तित्व में आई इसके बारे में बहुत लोगों को कोई जानकारी नहीं है परंतु परमेश्वर के वचन पवित्र शास्त्र बाइबिल में, इसका साफ वर्णन मिलता है। पहली किताब जिसका नाम उत्पत्ति है उसमें लिखा है।

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, और पृथ्वी बैडौल और सुनसान पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था। तब परमेश्वर ने कहा उजियाला हो, तो उजियाला हो गया, यह पहले दिन हुआ। फिर परमेश्वर ने जल को अलग किया और आकाश बनाया, और सूखी भूमी अलग करी, और समुद्र बनाया, इस तरह दूसरा दिन बीता। तब परमेश्वर ने पृथ्वी से हरी घास तथा बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ फलदाई वृक्ष भी उगाये और ये तीसरे दिन में हुआ। फिर दिन से रात को अलग करने के लिए आकाश में सूर्य और चंद्रमा बनाया और नक्षत्रों को भी बनाया, ये काम चौथे दिन हुआ। फिर परमेश्वर ने कहा कि जल जीवित प्राणियों से भर जाये और पक्षी आकाश में उड़ें, तो ये काम पाँचवे दिन हुआ। फिर परमेश्वर ने हर एक जाति के जीवित प्राणी घरेलू पशु, रेंगने वाले जंतु और वन पशु को उत्पन्न होने को कहा और वैसा ही हो गया।

मनुष्य की सृष्टि

फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाया। इसके पीछे उसका यही उद्देश्य था कि हम उसकी संतान कहलायें। परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य आदम को भूमी की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और तब आदम जीवता प्राणी बन गया। और परमेश्वर ने आदम को अदन के बाग में रखा। और परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और उसकी एक पसली निकालकर स्त्री की रचना करी, और आदम ने उसको नारी कहा, और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। और उन्हें सारी सृष्टि पर अधिकार दिया, और आशीर्वाद देकर कहा 'फलो-फूलो और पृथ्वी में भर जाओ और ये सृष्टि कर्म परमेश्वर ने छटवें दिन किया। यही सृष्टि का इतिहास है। जिसका वर्णन हमें और कहीं देखने नहीं मिलता है।

आचार्य यीशुदास जी बोले आगे मैं आपका सुनाता हूँ कि मनुष्य का पतन कैसे हुआ और आत्मिक मृत्यु और पाप कैसे आया। पाप परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ना है। पाप कर्म ही से नहीं, पर बुरे विचारों में और हमारे गलत उद्देश्यों में भी बीज की तरह छिपा रहता है।

पाप परीक्षा का वृक्ष

जिस अदन के बाग में परमेश्वर ने आदम और हवा को रखा था। वहाँ पर हर प्रकार के फलों के वृक्ष थे, जिन्हें वे भोजन के रूप में खा सकते थे। और बाग के बीचों बीच एक वृक्ष

था जिसका नाम ''भले और बुरे के ज्ञान'' का वृक्ष था, उस वृक्ष से संबंधित एक आज्ञा और चेतावनी परमेश्वर ने आदम को दी थी कि हर वृक्ष के फल को तुम बिना खटके खा सकते हो पर भले और बुरे के फल को मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम अवश्य ही मर जाओगे।

ये वृक्ष परीक्षा का वृक्ष था। जो पिता परमेश्वर और मनुष्य के बीच रिश्ते को जोड़ या तोड़ सकता था। पाप का जन्म कर सकता था।

पाप में गिरना

उत्पत्ति तीसरे अध्याय में लिखा है। अदन के बाग में जितने बनैले पशु-बनाये गये थे। उन सब में सर्प धूर्त था। स्त्री ने सर्प से कहा इस बाग के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष बाग के बीच में है उसके बारे में परम ईश्वर ने कहा, तुम नहीं खाना नहीं तो मर जाओगे तब सर्प ने स्त्री से झूठ बोला कि तुम निश्चय नहीं मरोगे और तुम्हारी आंखे खुल जायेंगी। और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के समान हो जाओगे। तब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है। तब उसने उसमें से तोड़कर खाया और अपने पति को भी खिलाया। उन दोनों की आंखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं।

शैतान ने परमेश्वर के सत्य को झूठ बताया और कहा तुम इस फल से निश्चय नहीं मरोगे। सच तो ये है कि इसे खाकर मनुष्य आत्मिक रूप से मर गया। परमेश्वर से संबंध टूट गया। अपनी बुद्धि से मनुष्य ईश्वर निर्माण में लगे और मुक्ति के लिये भटकने लगे। आत्मिक आंखे बंद हो गई और शारीरिक आँखे खुल गईं। शारीरिक आँखों का अर्थ है कानशंस या हमारा विवेक जो हमें एक नैतिक प्राणी बनाता है।

भले और बुरे की परिभाषा परमेश्वर की तरफ से नहीं पर मनुष्य की बुद्धि से आने लगी। पाप और पुण्य, सत्य और मुक्ति की गलत समझ आने लगी

परमेश्वर के सामने मनुष्य के ''मुक्ति कर्म'' व्यर्थ हैं। परमेश्वर ही ''मुक्ति उपाय'' बना सकता है। मनुष्य अपने पाप की कीमत खुद नहीं भर सकता है।

अर्थ

भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष जो फल देता है। वो मनुष्य की पांच इंद्रियों को जाग्रत कर देता है। मनुष्य परमेश्वर के आत्मिक जीवन से कट जाता है। और पाँच इंद्रियों में बंध जाता है। उसके वश में आ जाता है।

मुक्ति पाने के आत्मिक लक्ष्य को आँख से देखना कान से सुनना सुंगध पाकर मुँह से स्वादन करना और आकार विशेष को स्पर्श करना शैतान का झूठ है।

पवित्र शास्त्र बाइबिल में स्पष्ट है कि हम परमेश्वर को पांच इंद्रियों से नहीं देख सकते हैं। और न इनसे मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं 'मुक्ति' मनुष्य खरीद नहीं सकता है पर परमेश्वर के पास एक ''मुक्ति उपाय'' है। जिसे मनुष्य को एक वरदान के रूप में स्वीकार करना है।

आज मनुष्य मुक्ति या मोक्ष के लिये क्या नहीं करता है सोना, चांदी और धन देता है। पहाड़ों पर जंगलों में भटकता है। मनुष्य अपने हिसाब से ईश्वरों का निर्माण करता है, उसे स्वरूप और आकार देता है। ये सब अपनी इंद्रियों से परमेश्वर से संबंध करने के प्रयास है। बहुत लोग प्रभु यीशु की मूर्ती बनाने की गलती करते हैं।

पवित्र शास्त्र 'यूह 3:16 में लिखा है, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया है कि उससे अपने एकमात्र पुत्र प्रभु यीशु, को मुक्ति दान के रूप में दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, अर्थात् उसके बताये मुक्ति उपाय को स्वीकारे और विश्वास करे, तब वह नरक कुंड में दंड नहीं पायेगा पर मुक्ति और शाश्वत जीवन पायेगा।

तो ''मुक्ति'' मनुष्य के कर्मों से नहीं, लेकिन परमेश्वर के दिये 'उपाय' पर विश्वास से मिलती है।

मुक्ति का उपायः

प्रभु यीशु स्वर्ग से परमेश्वर के सत्य को लेकर आये। उन्होंने कहा पाप का दंड शारीरिक और आत्मिक मृत्यु है। परमेश्वर के प्रेम और मुक्ति उपाय को लेकर प्रभु यीशु मनुष्य रूप धारण करके आते हैं। वे ईश्वर थे, पवित्र थे, उन्होंने क्रूस की बलिवेदी पर बलिदान कर रक्त अपना बहाया। मनुष्य के पाप की कीमत अदा करी। तीसरे दिन वे मृत्यु पर विजय प्राप्त कर जीवित हो गये। और लोगों के देखते देखते स्वर्ग को गये।

यदि हम व्यक्तिगत रूप से इस 'मुक्ति के उपाय' पर विश्वास करते हैं। तो परमेश्वर मोक्ष का वरदान देते हैं। इसे विश्वास से स्वीकार करना है।

यह सुनकर कर्मानंद जी ने आचार्य यीशु दास जी से आग्रह किया कि मुक्ति प्रार्थना सरल रूप में बतायें।

मुक्ति प्रार्थनाः

हे प्रभु यीशु में अपने ''अधूरे कर्मों'' से मुक्ति पाने का प्रयास करता रहा हूं। आपने मेरा पापदंड स्वयं उठाया है। आज मैं आपके बलिदान और रक्तदान द्वारा दिये गये ''मुक्ति उपाय'' पर विश्वास करता हूँ। और उसे स्वीकार करता हूँ। मेरे पापों को क्षमा करो, और मुझे पवित्र आत्मा दो नया जीवन दान करो।

जय यीशु

सत्संग समाप्त हुआ। और आचार्य यीशुदास जी कृष्टग्राम जाने की तैयारी में साइकिल पर सामान बांधने लगे।

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM
[Registered under IndianTrust Act, 1882 Reg. No-6166
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com